Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

पुनर्गठित अजमेर जिले के ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक स्त्रोत

अभिषेक मिश्रा[1], डॉ.मनोज दाधीच[2]
[1]Ph.D Research Scholar, इतिहास
[2]सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय,पाहेर विश्वविद्यालय, उदयपुर
Email: abhimishra.5050@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171207
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 39-43
December 2025

Submitted: 15 Nov. 2025
Revised: 25 Nov. 2025
Accepted: 10 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सारांश

पुनर्गठित अजमेर या अजयमेरू नगर चौहान साम्राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध हुआ और तारागढ़ किला इसका प्रमुख केन्द्र था। अजयमेरु अपने समय में प्रशासनिक, धार्मिक और सैन्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नगर था। शिलालेख भारतीय इतिहास और पुरातत्व के सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोतों में गिने जाते हैं। शिलालेख प्रशासनिक और सैन्य गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करते हैं। ताम्रपत्र लेखन परंपरा विशेषकर भूमि दान, कर–मुक्ति, धार्मिक अनुदान और प्रशासनिक आदेशों को सुरक्षित रखने के लिए विकेसित हुई। अजमेर क्षेत्र की प्रागैतिहासिक सभ्यता का प्राचीन काल में सिंधु घाटी सभ्यता और पौराणिक काल में नौ पवित्र अरण्यों से संबध रहा है।

मुख्य शब्द: *अजयमेरू, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, धार्मिक नगर और सामरिक केन्द्र, अभिलेख, शिलालेख, ताम्रपत्र लेख, जीवंत धरोहर, भाषा, लिपि, कला, स्थापत्य शैली।*

पुनर्गठित अजमेर जिले का परिचय

राजस्थान सरकार द्वारा गठित जिलों के पुनर्गठन की समिति श्री रामलुभाया समिति की अनुशंसा पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की सरकार द्वारा अगस्त 2023 में राजस्थान राज्य सरकार द्वारा 19 नये जिलों का गठन व 18 पुराने जिलो का पुनर्गठन किया गया। 1113 ई. में स्थापित चौहान शासक अजयराज द्वारा स्थापित अजयमेरू ही अब अगस्त 2023 से पुनर्गठित हुआ है जो कि ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक पर्यटन की समुचे विश्व में एक जीवंत धरोहर है। यह नगर चौहान साम्राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध हुआ और तारागढ़ किला इसका प्रमुख केन्द्र था। अजयमेरु अपने समय में प्रशासनिक, धार्मिक और सैन्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नगर था। यहाँ के शिलालेखो और ताम्रपत्रो से यह सिद्ध होता है कि अजयमेरु हर काल में उत्तर भारत का एक प्रभावशाली शक्ति केन्द्र रहा।

अभिलेख

शिलालेख भारतीय इतिहास और पुरातत्व के सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोतों में गिने जाते हैं। ये शिलालेख सामान्यतः पत्थर, चट्टानों, मंदिरों, स्तंभों अथवा दुर्ग की दीवारों पर उत्कीर्ण पाए जाते हैं। इनमें तत्कालीन शासकों के आदेश, दानपत्र, धार्मिक अनुष्ठान, युद्ध–विजय, प्रजा–कल्याण संबंधी घोषणाएँ और सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है।

शिलालेखों का स्वरूप

अजमेर जिले में प्राप्त शिलालेखों का स्वरूप सामान्यतः संस्कृत और प्राकृत भाषा में है, जो नागरी और शारदा जैसी लिपियों में लिखे गए हैं। कुछ शिलालेख ब्राह्मी लिपि के प्रभाव को भी दर्शाते हैं। ये शिलालेख मंदिरों, किलों और तीर्थस्थलों पर उत्कीर्ण किए गए हैं। उदाहरणस्वरूप, पुष्कर शिलालेख चौहान शासकों की धार्मिक प्रवृत्तियों को प्रकट करता है, वहीं तारागढ़ किले के शिलालेख उनकी प्रशासनिक और सैन्य गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करते हैं।[प]

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अभिषेक मिश्रा, Ph.D Research Scholar, इतिहास

How to cite this article:
मिश्रा, . अभिषेक ., & दाधीच, . मनोज . (2025). पुनर्गठित अजमेर जिले के ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक स्त्रोत. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 39–43. https://doi.org/10.5281/zenodo.18183164

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18183164
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

शिलालेखों का महत्व

1.राजनीतिक महत्व– शिलालेख तत्कालीन शासकों की उपलब्धियों और प्रशासनिक आदेशों को संरक्षित रखते हैं। उदाहरण के लिए चौहान काल के शिलालेख अजयमेरु नगरी के उदय और विस्तार की जानकारी देते हैं।

2. धार्मिक महत्व– मंदिरों और तीर्थस्थलों पर उत्कीर्ण शिलालेख धार्मिक अनुष्ठानों, दान और पूजा–पद्धति के बारे में विस्तृत सूचना प्रदान करते हैं। पुष्कर शिलालेख इसका प्रमुख उदाहरण है।

3. सांस्कृतिक महत्व– शिलालेखों के माध्यम से तत्कालीन भाषा, लिपि, कला और स्थापत्य शैली की जानकारी मिलती है।

4. आर्थिक महत्व– इनमें भूमि दान, कर व्यवस्था और व्यापारिक गतिविधियों के उल्लेख मिलते हैं, जो आर्थिक इतिहास के अध्ययन में सहायक हैं।

5. इतिहास लेखन का आधार– शिलालेखों में घटनाओं की तिथि और स्थान स्पष्ट रूप से अंकित होते हैं, जिससे इतिहास की घटनाओं का प्रामाणिक पुनर्निर्माण संभव होता हैं।[पप पपप],

अजमेर जिले के शिलालेख न केवल चौहान वंश के उत्कर्ष और उनकी धार्मिक–राजनीतिक नीतियों को उजागर करते हैं, बल्कि वे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक महत्व को भी स्थापित करते हैं। इस प्रकार शिलालेख अजमेर के इतिहास और पुरातत्व की आधारशिला माने जा सकते हैं।

प्रमुख शिलालेख

अजमेर जिले के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को समझने के लिए यहाँ प्राप्त शिलालेख अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। ये शिलालेख तत्कालीन राजनीतिक स्थिति, धार्मिक गतिविधियों और सामाजिक–आर्थिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

1. ललित विग्रहराज और हरकेलि नाटक शिलालेख

अजमेर से प्राप्त दो प्रमुख शिलालेख "ललित विग्रहराज" और "हरकेलि नाटक" हैं। ये विग्रहराज चतुर्थ की साहित्यिक रुचि और सांस्कृतिक संरक्षण को स्पष्ट करते हैं। स्वयं वीसलदेव संस्कृत के महान कवि थे और उन्होंने हरकेलि नामक नाटक की रचना की। इन शिलालेखों से सिद्ध होता है कि अजमेर केवल राजनीतिक केंद्र ही नहीं था, बल्कि कला और साहित्य का भी महान केंद्र रहा।[पअ]

2. सरस्वती पाठशाला शिलालेख

अजमेर की सरस्वती पाठशाला से प्राप्त शिलालेख किसी चौहानकालीन ऐतिहासिक काव्य का अंश है। इसकी प्रथम शिला आज भी राजपूताना संग्रहालय, अजमेर में प्रदर्शित है। इसमें विभिन्न देवताओं की वंदना और सूर्य की स्तुति की गई है। इसके बाद चौहान वंश की उत्पत्ति और गौरवगाथा अंकित है, जिसमें चाहमान से लेकर विग्रहराज चतुर्थ तक के चौहान नरेशों का वर्णन मिलता है। यह शिलालेख चौहान वंश की परंपरा और सांस्कृतिक गौरव को प्रकट करता है।[अ]

3. हर्ष शिलालेख (वि.सं. 1030 / ई. 973)

यह शिलालेख विग्रहराज द्वितीय के काल का है। इसका अंकन वि.सं. 1030 आषाढ़ सुदि 15 (ई. 973) में किया गया था। यह शिलालेख सीकर जिले के हर्षनाथ की पहाड़ी पर स्थित शिवमंदिर से प्राप्त हुआ है। इसमें चौहान वंश की वंशावली दी गई है जिसमें गूवक से लेकर विग्रहराज और दुर्लभराज तक का उल्लेख है। यह शिलालेख चौहान वंश की प्रारंभिक ऐतिहासिक परंपरा और उनकी धार्मिक गतिविधियों को उजागर करता है।[अप]

4. शिवालिक स्तम्भ लेख (9 अप्रैल 1163 ई.)

दिल्ली में अशोक के एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण यह लेख विग्रहराज चतुर्थ के समय का है। इसमें कहा गया है कि वीसलदेव ने देश से मुसलमानों का सफाया कर दिया और अपने उत्तराधिकारियों को निर्देश दिया कि मुसलमानों को अटक नदी के उस पार तक सीमित रखें। यह लेख चौहान शासकों की राजनीतिक नीति, उनकी धार्मिक भावना और सैन्य शक्ति का प्रतीक है।

5. धौड़ गाँव का शिलालेख (वि.सं. 1224 / ई. 1168)

मेवाड़ के जहाजपुर परगने के धौड़ गाँव के रूठी रानी मंदिर से ई. 1168 का शिलालेख मिला है। इसमें उल्लेख है कि पृथ्वीभट्ट (पृथ्वीराज द्वितीय) ने अपनी भुजाओं के बल से शाकम्भरी नरेश पर विजय प्राप्त की। यह वही राज्य था जिसे विग्रहराज चतुर्थ ने पृथ्वीराज द्वितीय के पिता जगदेव से छीना था। इस शिलालेख में पृथ्वीराज द्वितीय की रानी का नाम सुहावदेवी दिया गया है। इससे चौहान वंश में शक्ति संघर्ष और राजनीतिक पुनःअधिग्रहण की जानकारी मिलती है।

6. बिजौलिया शिलालेख (वि.सं. 1226 / ई. 1169)

मेवाड़ के बिजौलिया (प्राचीन विन्ध्यवल्ली) की चट्टानों पर सोमेश्वर के दो शिलालेख उत्कीर्ण हैं। इनकी तिथि वि.सं. 1226 (ई. 1169) है। इनमें से एक में सोमेश्वर की वृहत प्रशस्ति दी गई है, जिसमें चाहमान वंश की वंशावली और इतिहास अंकित है। इस प्रशस्ति के रचयिता जैन महामुनि गुणभद्र थे, जिन्हें "कवियों के गले का आभूषण" कहा गया है। इसमें स्थानीय पार्श्वनाथ मंदिर के निर्माता सूत्रधार हरसिंग, उनके पुत्र पाल्हण और पौत्र आहड़ का भी उल्लेख है। यह शिलालेख केवल चौहान वंश ही नहीं, बल्कि उस काल की धार्मिक सहिष्णुता और जैन प्रभाव को भी दर्शाता है।

7. सिद्धसूरि विरचित ग्रंथ लेख (वि.सं. 1226)

सोमेश्वर के शिलालेखों की चट्टान के पास एक अन्य चट्टान पर जैन दिगम्बर आचार्य सिद्धसूरि द्वारा रचित उत्तमशिखर पुराण का अंकन किया गया था। इसे पोरवाड़ सेठ लोलिग ने शिलांकित करवाया और चित्रसुत केसव ने इसे उत्कीर्ण किया। यह ग्रंथ पाँच

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

सर्ग और 293 श्लोकों में विभक्त है। यह शिलालेख जैन साहित्य और धर्म की समृद्धि का उदाहरण है और अजमेर व आसपास के क्षेत्रों में जैन समुदाय के गहरे प्रभाव को प्रमाणित करता है।

अन्य संरक्षित शिलालेख

राजपूताना संग्रहालय, अजमेर की स्थापना 1902 में लार्ड कर्जन की प्रेरणा से प्रारंभ हुई और 1908 में इसे औपचारिक रूप से स्थापित किया गया। यहाँ चौहानकालीन और अन्य राजवंशों से संबंधित अनेक शिलालेख सुरक्षित रखे गए हैं। इनमें ईसा पूर्व 443 का ब्राह्मी लिपि का शिलालेख, संवत 703 का शिलादित्य का सामोली लेख, संवत 894 का जोधपुर से प्राप्त बाऊक का लेख, प्रतापगढ़ से प्राप्त महेन्द्रपाल द्वितीय का शिलालेख, हरकेलि नाटक के दो चौके, सोमदेव रचित ललित विग्रहराज नाटक के चौके तथा ई. 1234 का पृथ्वीराज तृतीय का बड़ला चौहान लेख प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त संग्रहालय में कई ताम्रपत्र भी संरक्षित हैं, जिनमें कलचुरी युग (ई. 437–38) का महाराज श्रावन्त का ताम्रपत्र, संवत 900 का प्रतिहार भोजदेव का दौलतपुरा ताम्रपत्र, संवत 1076 का परमार भोजदेव का लेख और संवत 1494 का मेवाड़ के राणा कुंभा का ताम्रपत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये शिलालेख और ताम्रपत्र न केवल राजस्थान बल्कि सम्पूर्ण भारत के इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर के महत्वपूर्ण प्रमाण माने जाते हैं।[अपप]

ताम्रपत्र लेख

ताम्रपत्र लेखन की परंपरा

भारतीय इतिहास लेखन और प्रशासनिक व्यवस्था में ताम्रपत्र का विशेष महत्व रहा है। यह परंपरा विशेषकर भूमि दान, कर–मुक्ति, धार्मिक अनुदान और प्रशासनिक आदेशोंको सुरक्षित रखने के लिए विकसित हुई। ताम्रपत्रों को स्थायित्व और प्रामाणिकता के कारण शासकों ने शिलालेखों के साथ–साथ एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में प्रयोग किया।

ताम्रपत्र का स्वरूप

ताम्रपत्र सामान्यतः तांबे की आयताकार या चौकोर पट्टिकाओं पर उत्कीर्ण होते थे।
इन्हें अक्सर श्रृंखला या छल्लों से जोड़ा जाता था और बीच में शासक की मुहर अंकित होती थी। इन पर संस्कृत, प्राकृत अथवा स्थानीय भाषाओं में लेखन होता था, जिसमें ब्राह्मी, नागरी और अन्य क्षेत्रीय लिपियों का उपयोग किया जाता था।[अपपप]

अजमेर क्षेत्र में ताम्रपत्र लेखन

अजमेर और राजस्थान के अन्य हिस्सों में चौहान शासकों और स्थानीय सामंतों द्वारा दिए गए भूमि दानों के प्रमाण ताम्रपत्रों में मिलते हैं। पुष्कर और आस–पास मिले ताम्रपत्र धार्मिक स्थलों को भूमि दान और कर–मुक्ति के आदेशों का उल्लेख करते हैं। इनसे यह ज्ञात होता है कि चौहान राजाओं ने मंदिरों और मठों को संरक्षण प्रदान किया।[पग]

महत्व

1. प्रशासनिक महत्व– ताम्रपत्रों के माध्यम से शासक अपने आदेशों को स्थायी और वैध रूप प्रदान करते थे।
2. धार्मिक महत्व– अधिकांश ताम्रपत्र मंदिरों, ब्राह्मणों और धार्मिक संस्थाओं को भूमि दान से जुड़े होते थे।
3. आर्थिक महत्व– इनमें भूमि कर, उपज और संसाधनों के वितरण की जानकारी मिलती है।
4. इतिहास लेखन में महत्व– तिथियों, शासकों के नाम, उपाधियाँ और सामाजिक व्यवस्था की सटीक जानकारी इनसे प्राप्त होती है।[ग,गप]

ताम्रपत्र लेखन की परंपरा ने अजमेर सहित सम्पूर्ण राजस्थान के इतिहास को सटीक और प्रामाणिक रूप में संरक्षित किया। यह परंपरा न केवल प्रशासनिक निर्णयों को स्थायित्व प्रदान करती थी बल्कि सामाजिकदृधार्मिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर करती है।

अजमेर क्षेत्र में मिले प्रमुख ताम्रपत्र

अजमेर और इसके आसपास का क्षेत्र चौहान वंश एवं अन्य राजवंशों की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है। यहाँ मिले ताम्रपत्र न केवल तत्कालीन प्रशासनिक निर्णयों का साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं बल्कि सामाजिकदृधार्मिक जीवन की झलक भी देते हैं।

1. पुष्कर ताम्रपत्र

पुष्कर तीर्थ से प्राप्त ताम्रपत्र चौहान शासकों द्वारा दिए गए भूमि दानों का उल्लेख करता है। इसमें ब्राह्मणों और धार्मिक संस्थानों को कर–मुक्त भूमि दान का विवरण है। यह ताम्रपत्र पुष्कर को धार्मिक केन्द्र के रूप में स्थापित करता है और चौहान शासकों की धार्मिक प्रवृत्ति को प्रमाणित करता है।[गपप]

2. अजमेर ताम्रपत्र

तारागढ दुर्ग क्षेत्र से मिले ताम्रपत्रों में प्रशासनिक आदेश और स्थानीय गाँवों के राजस्व से संबंधित विवरण मिलता है। इनमें भूमि कर और उपज के वितरण का उल्लेख है, जिससे चौहान वंश की आर्थिक नीतियों की जानकारी मिलती है।[गपपप]

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

प्राचीन सभ्यताएँ और नगर

1. अजमेर क्षेत्र की प्रागैतिहासिक सभ्यता

अजमेर जिले में मानव सभ्यता के प्रारंभिक प्रमाण खेड़ा और कडेरी गाँव से मिले हैं। यहाँ से मेगालिथिक एवं नॉन–मेगालिथिक पॉलिशयुक्त लाल एवं काले औजार, चित्रयुक्त सलेटी उपकरण, भूरे रंग के बर्तन तथा काले–लाल रंग के मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं। चोसला गाँव से उत्तरी क्षेत्र की काली मिट्टी से बने बर्तन भी मिले हैं। ये सभी प्रमाण बताते हैं कि अजमेर क्षेत्र में मानव सभ्यता का विकास ईसा पूर्व काल से ही प्रारंभ हो गया था।[गपअ]

2. सिंधु घाटी सभ्यता से संबंध

सिंधु घाटी सभ्यता के साथ अजमेर क्षेत्र का प्रत्यक्ष संबंध रहा। यहाँ की पहाड़ियों से सीसा और अभ्रक के टुकड़े प्राप्त होते थे, जिन्हें वहाँ बाट और औजार बनाने में प्रयोग किया जाता था। यह संभावना भी प्रबल है कि सिंधु सभ्यता में प्राप्त स्वर्ण–रजत निर्मित तश्तरियाँ और अन्य वस्तुएँ भी अजमेर क्षेत्र से ही ले जाई गई हों। इससे सिद्ध होता है कि अजमेर प्राचीन व्यापारिक और औद्योगिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केंद्र था।[गअ]

3. पौराणिक काल में पुष्कर

पुष्कर का महत्व पौराणिक काल से ही रहा है। देवी पुराण में इसे नौ पवित्र अरण्यों में से एक कहा गया है। पद्म पुराण के अनुसार ब्रह्मा के हाथ से गिरे कमल पुष्प से तीन पुष्कर बने– ज्येष्ठ, मध्य और कनिष्ठ।

रामायण में उल्लेख है कि ऋषि विश्वामित्र ने पुष्कर में तप किया था और मेनका प्रसंग भी यहीं घटित हुआ।

महाभारत में भी पुष्कर सरोवर में स्नान का निर्देश मिलता है। इस प्रकार पुष्कर को प्राचीन काल से ही धार्मिक और सांस्कृतिक तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त रही।[गअप]

4. बड़ली और पद्मावती नगर

अजमेर से लगभग 58 किलोमीटर दूर बार्ली गाँव से ईसा पूर्व 443 का ब्राह्मी शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिसमें जैन तीर्थंकर महावीर का उल्लेख है। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समय बार्ली जैन संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र था। यहाँ से प्राप्त सिक्कों और शिलालेखों से बार्ली की समृद्धि और नगर स्वरूप का भी प्रमाण मिलता है।

स्थानीय परंपराओं के अनुसार जैन राजा पद्मसेन ने तारागढ़ की तलहटी में पद्मावती नामक नगरी बसाई थी, जिसे इंदरकोट भी कहा गया। यह नगर सरस्वती, नन्दा और पाराची नदियों से सिंचित था और लंबे समय तक समृद्धिशाली रहा।[गअपप]

5. दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का पुष्कर

सांची स्तूप से प्राप्त शिलालेख बताते हैं कि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में पुष्कर निवासी भिक्षुओं– अर्हदीन, नगरक्षित, हिमगिरि और ईसिदत्ता ने वहाँ दान दिया था। यह प्रमाण पुष्कर के धार्मिक महत्व के साथ–साथ उसकी आर्थिक प्रतिष्ठा को भी दर्शाता है।[गअपपप]

6. प्रथम शताब्दी ईस्वी का पुष्कर और उत्तमभद्र

पुष्कर के समीप नन्द क्षेत्र से कुषाणकालीन स्तंभ मिला है, जिससे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक उन्नति सिद्ध होती है। इसी काल में यहाँ उत्तमभद्र जनजाति निवास करती थी। नासिक की गुफाओं के शिलालेख से ज्ञात होता है कि शक शासक ऋषभदत्त ने पुष्कर सरोवर में स्नान करने के बाद गाँव और गायों का दान किया। पुष्कर से बैक्ट्रियन, यूनानी और शक क्षत्रपों के सिक्के भी मिले हैं, जो इसे एक समृद्ध और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक केंद्र सिद्ध करते हैं।[गपग]

7. गुप्तकालीन पुष्कर और अजमेर

गुप्तकाल में पुष्कर अपनी समृद्धि बनाए रहा। यहाँ से गुप्त शासकों के सोने–चाँदी के सिक्के तथा ताँबे के गधैया सिक्के मिले हैं। इससे स्पष्ट है कि गुप्तकाल में भी पुष्कर धार्मिक और व्यापारिक दृष्टि से प्रतिष्ठित नगर था। संभव है कि इसी काल या उससे पहले तारागढ़ दुर्ग तथा अजमेर नगर का भी आरंभिक स्वरूप अस्तित्व में आ चुका था।[गग]

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व

वैदिक और उत्तरवैदिक काल से ही पुष्कर को हिंदू धार्मिक आस्था का केंद्रमाना गया। यह स्थल आज भी कार्तिक पूर्णिमा के मेले और ब्रह्मा मंदिर के कारण विश्व प्रसिद्ध है। इस कालीन उल्लेख यह प्रमाणित करते हैं कि अजमेर का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व सहस्राब्दियों से निरंतर चला आ रहा है।[गगप]

वैदिक और उत्तरवैदिक कालीन साहित्य में पुष्कर के उल्लेख से यह स्पष्ट होता है कि अजमेर क्षेत्र न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था, बल्कि इसका धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी अत्यधिक था। इस क्षेत्र का तीर्थराज स्वरूप आज तक कायम है, जो इसे वैदिक काल से आधुनिक युग तक एक सतत धार्मिक पर्यटन स्थल बनाता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

संदर्भसूची

1. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 61
2. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 61
3. हर बिलास सारदा, अजमेर : ऐतिहासिक और वर्णनात्मक, हिगिनबोथम्स, मद्रास, 1911, पृष्ठ 47
4. रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 121
5. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 64
6. रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 329
7. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 116.118
8. डी.सी. सरकार, इंडियन एपिग्राफी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1965, पृ. 221
9. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 71
10. रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 147
11. राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 153
12. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 74
13. हर बिलास सारदा, अजमेर : ऐतिहासिक और वर्णनात्मक, हिगिनबॉथम्स, मद्रास, 1911, पृष्ठ 59
14. रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 39
15. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 25
16. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 26
17. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 27
18. राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 21
19. रीमा हूजा, राजस्थान का इतिहास, रूपा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 47
20. मोहनलाल गुप्ता, अजमेर का वृहत् इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1984, पृ. 31
21. राजस्थान सरकार, अजमेर जिला गजेटियर, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर, 1966, पृष्ठ 27